International Journal in Management and Social Science
Volume 11 Issue 10, October 2023 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

"माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं भूमिका संघर्ष के विषय में तुलनात्मक अध्ययन"

सरिता कुमारी

रिसर्च स्कॉलर

प्रस्तावनाः-

शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की नींव है। क्योंकि इसी नींव पर शिक्षाप्रक्रिया की इमारत खडी की जाती है। यदि नींव मजबूत होगी तभी इमारत कीमजबूती की कल्पना की जा सकती है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरतप्रशिक्षक इस नींव को तैयार करने वाले कुशल शिल्पी हैं अत: नींव की मजबूतीका उत्तरदायित्व इन्हीं प्रशिक्षको पर है। इसीलिए हम कह सकते है कि शिक्षकशिक्षा राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला है।

अतीत से अद्यतन हम जिस प्रगति एवं विकास की सम्प्राप्ति करते आयेहै। उस प्रगति एवं विकास के निर्माण की कार्यशालाएं हमारे विद्यालय कीकक्षायें ही है। इन कक्षाओं हेतु सुयोग्य व सुप्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकताको दृष्टिगत रखते हुए शैक्षिक नीति-नियन्ताओं ने विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षणपाठ्यक्रमों का विकास किया है। इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का सफल क्रियान्वयनशिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षको की कुशलता पर ही निर्भर है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा की प्रगति के साथ ही प्रशिक्षण कीसमुचित व्यवस्था एवं शिक्षकों के आर्थिक स्तर को उन्नत करने का प्रयासकिया गया फिर भी आज सर्वाधिक आलोचना का विषय शिक्षा व शिक्षक हीहै।

नयी शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के उपरान्त प्राथमिक शिक्षा में नवीनक्रान्ति का सूत्रपात हुआ है। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत प्रगति केसाथ ही स्वाभाविक रूप से योग्य व प्रशिक्षित शिक्षकों की न्यूनता प्रकाश मेंआयी।

अत: उच्च माध्यमिक स्तर के कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवंभूमिका संघर्ष का उनके समायोजन के सन्दर्भ में तुलता करना आवश्यक है।

समस्या का चयन -

कोविड-19 महामारी के बाद स्कूल खुलने के बाद शिक्षक कार्य के प्रतिसन्तुष्ट नहीं है तथा भूमिका उचित रूप से निभा नहीं पा रहे है। शोधार्थी केमन में प्रश्न उठा कि इसका जिम्मेदार कौन है? सरकार, अभिभावक, विद्यार्थीया स्वयं शिक्षक है? इसी प्रश्न का उत्तर पाने के लिए शोधार्थी ने इस समस्याका चयन किया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व-

प्रस्तुत अनुसंधान माध्यमिक स्तर के कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टिएवं भूमिका संघर्ष । उनके समायोजन के सन्दर्भ का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

किसी राष्ट्र की मानव शक्ति की गुणवत्ता शिक्षा के स्तर से प्रभावितहोती है। शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव है। समय केसाथ-साथ पुरातन सामाजिक व जीवन मूल्य अपनी प्रासंगिकता खो चुके है।

शिक्षक ने अपना गौरवशाली व्यक्तित्व खो दिया है। वह आज भाड़े के मजदूरकी भॉति अर्थोन्मुख हो गया है।

यदि सिक्के का दूसरा पहलू देखें तो हम पाते है कि औद्योगीकरण ववैश्वीकरण के रंग में रंगते जा रहे इस भौतिकतावादी समाज में सम्मान जनकजीवनयापन हेतु शिक्षकों के दृष्टिकोण में बदलाव अप्रत्याशित नही है। इसस्थिति के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी स्वयं समाज ही है।

असंतुष्ट शिक्षक केवल अधकचरे ज्ञान से सराबोर विद्यार्थी ही उत्पन्नकर पायेगा जो राष्ट्र को पतन के गर्त में ले जायेंगे। एक असंतुष्ट शिक्षक सेछात्रों में मूल्यों, रूचियों, अभिवृत्तियों, आदतों एवं वैयक्तिक समंजनशीलता केसृजन एवं विकास की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

अतः शोधकर्ती को यह अनुभव हुआ, कि माध्यमिक स्तर के कार्यरतशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं भूमिका संघर्ष के समायोजन के सन्दर्भतुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है।

समस्या कथन-

“माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवं भूमिका संघर्ष केविषय में तुलनात्मक अध्ययन”

प्रयुक्त शब्दों का स्पष्टीकरण-

शोधकर्ता ने समस्या कथन में प्रयुक्त प्रमुख शब्दों को निम्नवत्परिभाषित किया है—

कार्य संतुष्टि (Work Satisfaction) -

“कार्य संतुष्टि प्रत्यय मनुष्य का अपने वातावरण से वह धनात्मकसमायोजन है जो उसकी जीवित रहने की परिस्थितियों को सुनिश्चित करें एवंजीवन संघर्ष को सरल बनायें।”

-बी0बी0 अकोलकर

भूमिका संघर्ष -

"भूमिका संघर्ष एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति की समस्त आंतरिकशक्ति संस्था के लक्ष्य की ओर निर्देशित होती है। भूमिका संघर्ष मूलआवश्यकताओं से उपज कर एवं कार्य स्थल की परिस्थितियों से प्रेरित होकरएक शक्ति के रूप में कार्य करती है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी योग्यता एवंक्षमता का अधिकततम् प्रदर्शन कर सके।"

- स्टीफन एम0 कोरे

अध्ययन के उद्देश्य -

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूषशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का

तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूषशिक्षकों की भूमिका संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत महिलाशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत महिलाशिक्षकों की भूमिका संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन करना

5. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकों कीभूमिका संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं-

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूषशिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूषशिक्षकों की भूमिका संघर्ष में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत महिलाशिक्षकों कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत महिलाशिक्षकों की भूमिका संघर्ष में कोई अन्तर नहीं है।

5. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिलाशिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि संघर्ष में कोई अन्तर नहीं है।

6. माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरूषशिक्षकों कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोईसार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन -

1. प्रस्तुत शोध कार्य केवल सिकन्द्राबाद से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयोंमें कार्यरत शिक्षको पर ही किया गया है।

2. प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकोंको सम्मलित किया गया है।

3. प्रस्तुत शोध में प्रदपष्त संकलन हेतु उद्देशीय याद्दच्छिक विधि काप्रयोग किया गया है। ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों को शामिल नहींकिया गया है।

4. प्रस्तुत शोध को दो चरों "कार्य-संतुष्टि एवं भूमिका संघर्ष, तकसीमित रखा गया है।

5. प्रस्तुत शोध में लगभग 200 शिक्षकों (पुरूष व महिला) को शोध काआधार बनाया गया है।

6. प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि एवंभूमिका संघर्ष का ही अध्ययन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण –

० शोधकर्ता की समस्या के चयन व परिसीमन में सहायता प्रदान करताहै।

० अनुसंधान की पुनरावृत्ति से बचाता है।

० विश्लेषणीय परिकल्पनाओं के निर्माण में सहायता प्रदान करता है।

० अनुसन्धान से प्राप्त परिणामों की समीक्षा करने के लिए शोधकर्ता मेंसमीक्षक दृष्टिकोण का विकास करता है।

शोध प्रविधि -

शोध के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए उचित शोध प्रविधि का चयनकरना आवश्यक होता है। उचित शोध प्रविधि के चयन से ही अध्ययन सेसम्बन्धित प्रदत्तों का संकलन एवं विश्लेषण विश्वसनीयता तथा वैद्यता के साथकिया जा सकता है।

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध कीसर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी-

मध्यमान (Mean), मानक विचलन (S.D.), टी- परीक्षण (t-test)

प्रयुक्त उपकरण -

शोधकर्त्री ने समस्या के विशिष्ट स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुयेडॉ० क्यू0 जी0 आलम व रामजी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित "जीवन संतुष्टि मापनी'(Life Satisfaction Scale) का प्रयोग किया तथा द्वितीय उपकरण के रूप मेंडॉ० के0जी0 अग्रवाल द्वारा निर्मित भूमिका संघर्ष मापनी' (Work Motivation Scale) का प्रयोग किया है।

अध्ययन के निष्कर्ष -

शोधकर्ता के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् है-

* सरकारी स्कूल व निजी स्कूल में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि में अन्तर पाया गया। सरकारी स्कूल कार्यरत पुरूष शिक्षक वनिजी स्कूल में कार्यरत पुरूष शिक्षकों से जीवन में अधिक सन्तुष्टपाये गये।

*सरकारी स्कूल व निजी स्कूल में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की भूमिकासंघर्ष के स्तर में अन्तर पाया गया। सरकारी स्कूल में कार्यरत पुरूषशिक्षकों की भूमिका संघर्ष का स्तर निजी स्कूल में कार्यरत पुरूषशिक्षकों से अधिक पाया गया।

* सरकारी स्कूल व निजी स्कूल में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि में अन्तर पाया गया। सरकारी स्कूल महिला शिक्षक निजीस्कूल में कार्यरत महिला शिक्षकों से जीवन में अधिक सन्तुष्ट पायीगयीं ।

* सरकारी स्कूल व निजी स्कूल में कार्यरत महिला शिक्षकों की भूमिकासंघर्ष में अन्तर पाया गया। सरकारी स्कूल में कार्यरत महिलाशिक्षकों से जीवन में अधिक संतुष्टि पायी गयी।

शैक्षिक निहितार्थ-

प्रस्तुत शोध में प्राप्त शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार है-

1. वेतन में उचित वृद्धि करके निजी विद्यालयों के अध्यापकों मेंसकरात्मक मनोवृत्ति विकसित कर कार्य-संतुष्टि को बढ़ायाजा सकता है।

2. स्वस्थ्य कार्यात्मक वातावरण का निर्माण करके अध्यापकों मेंकार्य संतुष्टि को बढ़ाया जा सकता है।

3. आवासी सुविधाएँ प्रदान करने निजी विद्यालयों के अध्यापकोंमनोवृत्ति विकसितमें कार्य के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति विकसित की जासकती है तथा सकारात्मक कार्य-संतुष्टि को प्रोत्साहितकिया जा सकता है।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव -

भावी अनुसन्धान हेतु सुझाव निम्नवत् है --

1. प्रस्तुत शोध को सरकारी स्कूल व निजी स्कूल सिकन्द्राबाद तक हीसीमित रखा गया है। भावी शोधकर्त्री इससे अधिक विस्तृत क्षेत्र कोआधार मानकर शोध कार्य सम्पन्न कर सकते है।

2. प्रस्तुत शोध में सरकारी स्कूल व निजी स्कूल में कार्यरत शिक्षकों कीकार्य संतुष्टि' व 'भूमिका संघर्ष, का अध्ययन किया गया हैं। भावीशोधकर्ता उनके शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार पर

अध्ययन कर सकते हैं।

3. प्रस्तुत शोध सरकारी स्कूल व निजी स्कूल पर सम्पन्न किया गया है।भविष्य में इस शोध को शिक्षा के अन्य स्तरों विशेषरूप से माध्यमिक वउच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों पर केन्द्रित किया जा सकता है।

4. भविष्य में शोधकर्ताओं द्वारा सरकारी स्कूल व निजी स्कूल में कार्यरतशिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जासकता है।

सन्दर्भः-

- Adilya, Neeta (1989). A study of life satisfaction of the prinutry level teachers woking in shishu mandir. aided and municipal schools of Bareilly. M.Ed. dissertation. Rohilkhand University, Bareilly.
- Aganva, Sleenakshi (1991), satisfaction of primary school teachers in relation to some demographic variables and values. Ph.D., Edu.. Agra University.
- DWI. M. (1986). A comparative study of job satisfaction among primary school teachers and second, school teachers. Ph. D.. Edu., Lucknow University.
- Gonsalves, F.(1989). A critical study of IA satisfaction of primary school teachers. Ph. D., Edu., SNEff women's University.
- Kolte, N.V. (1987). lob satisfaction of primary school reachers : A test of the generality of the two factor theory. Hydembad : National institute of rural development.
- भटनागर, ए0बी0 (1992), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, मेरठसूर्या पब्लिकेशन।
- कपिल, एच0के0 (1995), अनुसंधान विधियाँ, आगरा: हर प्रसाद भार्गव बुकहाउस।
- पाण्डेय, आर0 एस0 1998), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा:विनोद पुस्तक मन्दिर।
- सिंह, के0 (2003), भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, लखीमपुर खीरीःगोविन्द प्रकाशन।
- सिंह, एन0पी0 (2003), शिक्षा के दार्शनिक आधार, मेरठ: आर० लाल बुकडिपों।